बाइबल टीचर

वर्ष 18 | जून 2021 | अंक 7

सम्पादकीय

क्या आप जानते हैं कि हम अन्तिम समय में रह रहे हैं?

बाइबल हमें बताती है कि हम जिस युग में रह रहे हैं, वो एक ऐसा समय है जो अंतिम है और प्रेरित पौलुस ने इसके विषय में यह कहा था कि, ''यह जान रख कि अंतिम दिनों में कठिन समय आएंगे। क्योंकि मनुष्य अप-स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निंदक, माता-पिता की आज्ञा टालने वाले, कृतघन, अपवित्र, मयारहित, क्षमारहित दोष लगाने वाले असंयमी कठोर, भले के बैरी, विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे पर उसकी शक्ति को न मानेंगे, ऐसो से परे रहना (2 तीमु. 3:1-5)। प्रेरित पौलूस ने जो कहा था, वो बात आज हमारे संसार में आम देखने को मिल रही है।

आज हमारे संसार में बुराई तेजी से फैल रही है। बुराई को अच्छाई करके दिखाया जा रहा है। समलैंगिक रिश्ते को सही माना जा रहा है। डिवोर्स (तलाक) को बुरा नहीं माना जाता तथा बिना विवाह के एक साथ रहने को गलत नहीं समझा जाता। जिस प्रकार से नूह के समय में लोग बुराई में लगे हुए थे वैसे ही आज के युग में भी हो रहा हैं। हम 2020-2021 तक पहुँच गये है, तथा अब तक संसार आपको कैसा दिखाई दे रहा है? मसीहियों को अपने आस-पास देखने की आवश्यकता है कि हम जिस युग में रह रहे हैं वो हमारे लिये कैसा है? जिस प्रकार की खबरे हमें सुनने को मिल रही हैं उनमें यह दिखाई देता है कि यह संसार अब सुरक्षित नहीं है।

आज मसीहीयों को कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना कर पड़ रहा है। यीशु ने भी कहा था और चेतावनी दी थी कि उसके लोगों को किस प्रकार से इस कठिन समय का सामना करना पड़ेगा। यीशु ने कहा था, ''यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उसने तुम से पहिले मुझसे भी बैर रखा था। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है, इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है। जो बात मैंने तुम से कही थी कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसको याद रखो यदि उन्होंने मुझे सताया तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी,

तो तुम्हारी भी मानेंगे। परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे, क्योंकि वे मेरे भेजने वाले को नहीं जानते।'' (यूहन्ना 15:18-21)।

मसीह के नाम के कारण कई बार मसीही लोगों को सताव का सामना करना पड़ता है और आज के युग में ऐसा हो रहा है। मसीही लोग बड़े ही शांतिपूर्ण लोग है। परन्तु एक बात हमेशा याद रखें कि परमेश्वर आप के साथ हैं। आज यह आवश्यकता है कि हमें अधिक से अधिक लोगों को सुसमाचार देना है कि प्रभु यीशु ने किस प्रकार से हमारे पापों के लिये क्रूस पर अपनी जान दी। पूरे संसार को यीशु के सुसमाचार की आवश्यकता है। शायद हमें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़े, जैसे प्रेरित पतरस ने कहा था, ''हे प्रियो मैं तुम से बिनती करता हूँ, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन संसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती है, बचे रहो। अन्य जातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो, इसलिये कि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर, उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करे।'' (1 पतरस 2:11-12)। मसीही लोगों को पतरस समझाता है कि इस संसार में रहते हुए अपने को परदेशी समझें और यह न सोचे कि हम इस संसार में हमेशा रहेंगे। जब तक यहां है तब तक बुराई का सामना करें तथा परमेश्वर के कार्य में लगे रहें।

यीशु ने कहा था कि ''तुम पृथ्वी के नमक हो, जगत की ज्योति हो'' (मत्ती 5:13-14)। इसलिये संसार में रहते हुए ज्योति की नाई चमको और नमक जैसा स्वाद रखो। (मत्ती 5:13-14)। मसीही लोगों को यह समझना चाहिए कि वे एक दौड़ में भाग ले रहे हैं। यह एक ऐसी दौड़ है जिसमें बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है जिस प्रकार से प्रेरित पौलुस कहता है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो। और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुर्झाने वाले मुकुट को पाने के लिये सब करता है, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं। इसलिये मैं तो इस रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु बे ठिकाने नहीं, मैं भी इसे रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उसकी नाई नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। परन्तु मैं अपनी देह को मारता-कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।'' (1 कुरि. 9:24-27)। यहां हम देखते हैं कि इस संसार में रहते हुए जब हम एक अच्छा मसीही जीवन व्यतित करते हैं तो हमें बहुत मुसीबतों का सामना करते हुए आगे बढ़ना है।

मसीही भाईयों को इन कठिन समयों में अपने साहस को नहीं तोड़ना है बल्कि इस अंतिम युग में सब बातों का सामना करना है और जो अन्त तक धीरज रखेगा उसी को जीवन का मुकुट मिलेगा। (प्रकाशित 2:10)। इस अंतिम युग में जिसमें हम रह रहे हैं, हमें मसीह के प्रेम में बंधे रहकर अपने जीवन को जीना है, जिस प्रकार से पौलुस कहता है, कि हमें मसीह के प्रेम से कोई अलग नहीं कर सकता। (रोमियों 8:35)।

परमेश्वर का अनुग्रह सब लोगों पर प्रकट है

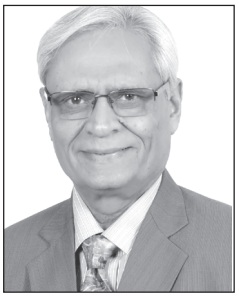

सनी डेविड

मित्रो, यह संसार सचमुच में एक विशाल बाग की तरह है, जिसमें हर किस्म के रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े, सुगंधित और असुगंधित, मुलायम और कंटीले, पौधे और पेड़ पाए जाते है। इस पृथ्वी पर लगभग छः सौ करोड़ लोग रहते हैं। उन लोगों के अलग-अलग रूप है; अलग-अलग भाषाएं हैं; अलग-अलग सांस्कृतियां है। पर उन सब लोगों को एक ही परमेश्वर ने बनाया है। वे सब के सब लोग एक ही परमेश्वर के वंश है। हम सब का वह परमेश्वर पिता किसी के साथ भी पक्षपात नहीं करता।

जब हम शारीरिक दृष्टिकोण से इस बात पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं, उस स्वर्गीय पिता ने हम सब के लिये जल और वायु और हर तरह की खाने-पीने की वस्तुएं पैदा की है। उसकी धूप और बारिश के हम सब अधिकारी हैं। वह किसी का पक्षपात नहीं करता। हां, वह अपनी किसी भी वस्तु को हमें जबरन नहीं देता। पर उसने हम सब के लिये उन चीजों को बनाया है। और वह स्वयं हम पर निर्भर करता है कि हम उसकी दी हुई वस्तुओं को प्राप्त करके उनसे लाभांवित हो या न हो। यानि, जब हमें पानी पीना होता है, तो हमें स्वयं ही पानी पीना पड़ता है, और जब हमें भोजन खाने की आवश्यकता होती है, तो हमें खुद अपने आप भोजन प्राप्त करके उसे खाना पड़ता है। अर्थात परमेश्वर ने हमारे लिये जल और भोजन बनाए तो अवश्य हैं, पर उन्हें प्राप्त करना और पीना और खाना और उनके सेवन से फायदा उठाना यह हमें स्वयं ही करना पड़ता है। परमेश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। उसके सामने हम सब बराबर है। उसने सब कुछ सब लोगों के लिये पैदा किया हैं पर उन वस्तुओं को प्राप्त करना और उनसे लाभ उठाना यह हम सब का अपना काम है। और जब इसी बात को हम आत्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो वहां भी हमें यही बात मिलती है। अब, हम सब यह बात जानते हैं, कि हम सब पापी है। यानि, पृथ्वी पर कोई भी ऐसा इंसान नहीं है, जिसने कभी कोई पाप न किया हो। वास्तव में सारा जगत पाप के वश में है। जहां पाप है, वहीं मनुष्य है; और जहां मनुष्य है, वहीं पाप है। और पाप के कारण सारी मानवता का भविष्य केवल नरक है। क्योंकि पाप के साथ कोई भी इंसान परमेश्वर के पवित्र स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता। किन्तु परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है। उसने हमें बनाया है और इसलिये वह हम से प्यार करता है। और क्योंकि वह हम से प्यार करता है, इसलिये वह यह भी चाहता है, कि हम सब के सब उसके पास आकर उसके साथ उसके स्वर्ग में रहे। लेकिन पाप बीच में आ जाता है। और वह मनुष्य को परमेश्वर के पास जाने से रोकता है।

सो, इसलिये, पृथ्वी पर मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या पाप हैं और पाप सब के जीवन में है। पाप इंसान को परमेश्वर के पास जाने से रोकता है। मनुष्य ने जमीन पर बड़े-बड़े काम किये है- ओर वह बहुत बड़े-बड़े काम कर सकता है। लेकिन इंसान पाप और पाप के दण्ड से अपने आप को मुक्ति नहीं दिला सकता। जिस प्रकार से जीवन और मृत्यु मनुष्य के हाथ में नहीं है। उसी तरह से पाप से छुटकारा पाना भी इंसान के वश की बात नहीं है।

बाइबल में लिखा है, कि सबने पाप किया है, और सब के सब परमेश्वर से अलग हैं। (रोमियों 3:23)। परन्तु बाइबल यह भी कहती है, कि परमेश्वर का हाथ ऐसा छोटा नहीं है कि वह मनुष्य को पाप की दलदल से बाहर न निकाल सके; और वह ऐसा बहिरा नहीं है, कि मनुष्य की उद्धार पाने की आवाज को न सुन सके। परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने बाइबल कहती है, तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, ओर तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। (यशायाह 59:1, 2)।

इसलिये, परमेश्वर के पास अपने को योग्य बनाने के लिये उसके स्वर्ग में प्रवेश के योग्य बनने के लिये, मनुष्य को अपने पापों से छुटकारा पाना बड़ा ही जरूरी है। परन्तु मनुष्य स्वयं कुछ भी करके या कुछ भी देकर अपने पापों से छुटकारा नहीं प्राप्त कर सकता। उसे परमेश्वर की जरूरत है। क्योंकि केवल परमेश्वर ही कोई ऐसी युक्ति निकाल सकता है, जिससे मनुष्य को पाप का दण्ड भी मिल जाए; अर्थात जिससे मनुष्य के पापों का प्रायश्चित भी हो जाए ओर उसे पाप से छुटकारा भी मिल जाए। और परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में हमें यही सुसमाचार मिलता है, कि परमेश्वर का वह अनुग्रह जो सब लोगों के उद्धार का कारण है, सारे जगत पर प्रकट है। और वह हमें चिताता है कि हम सब अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और भक्ति के साथ जीवन बताएं। और उस धन्य आशा की, अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की बाट जोहते रहे। जिसने अपने आप को हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले कामों में सरगर्म हो। (तीतुस 2:11-15)

सो इस तरह से हम यह देखते हैं कि परमेश्वर का वह अनुग्रह, जो सब जगत पर सब लोगों के लिये पाप से मुक्ति पाने के लिये जरूरी है, सब मनुष्यों पर प्रकट है। और परमेश्वर का वह अनुग्रह यह है, कि उसने अपने साथ रहने वाले अपने पवित्र वचन को एक मनुष्य के रूप में, अपने एकलौते पुत्र के रूप में एक मनुष्य की समानता पर इस पृथ्वी पर भेजा था। उसी के द्वारा परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच में बड़े-बड़े सामर्थ के काम किए थे। और बड़ी-बड़ी महत्वपूर्ण शिक्षाएं दी थी। और फिर उसी को परमेश्वर ने अपने अदभुत ज्ञान से ओर अपनी विशाल सामर्थ से पापी मनुष्यों की ईर्ष्या और विरोध का निशाना बनाया था। सो उन लोगों ने परमेश्वर के निर्दोष और एकलौते पुत्र को पकड़कर और उसे दोषी ठहराकर एक अपराधी के समान क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला था। और इस प्रकार से परमेश्वर ने

अपनी इस महान और अद्‌भुत योजना को पूरा किया था, कि उसने सारे जगत के सब लोगों के पापों के बदले में अपने ही एकलौते पुत्र को दण्डित किया, और वह क्रूस पर अपने निर्दोष बलिदान के कारण सारे जगत के सब लोगों के पापों के लिए परमेश्वर की दृष्टि में प्रायश्चित ठहरा।

इस तरह से, आज पृथ्वी पर कहीं भी, कोई भी व्यक्ति मसीह यीशु में विश्वास लाकर और पाप से अपना मन फिराकर और अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह की आज्ञानुसार जल में बपतिस्मा लेकर, परमेश्वर के अनुग्रह से अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर सकता है। और इस प्रकार परमेश्वर की संतान बनकर एक अच्छा और नेक, पवित्र और भला जीवन व्यतीत कर सकता है। और जो इंसान परमेश्वर की इच्छा को मानकर ऐसा करता है वह यह जानता है कि, अब उसे अपने पापों का दण्ड नहीं मिलेगा। क्योंकि परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह, उसके पापों का प्रायश्चित है। और वह इस जीवन के बाद स्वर्ग के हमेशा के उस उत्तम जीवन में प्रवेश करेगा जहां परमेश्वर और उसके लोग सदा निवास करेंगे। क्या आपने परमेश्वर के सुसमाचार को माना है? क्या आप परमेश्वर के सुसमाचार को मानकर उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये अपने आप को तैयार करेंगे?

मनुष्य का उद्धारकर्ता

जे. सी. चोट

अपने इस पाठ में हम यह देखेंगे कि यीशु किस प्रकार से मनुष्य का उद्धारकर्ता या मुक्तिदाता है। परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य उसकी इच्छा को जाने।

आप शायद यह प्रश्न करें कि मनुष्य को एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता क्यूं है? कई लोग ऐसे हैं जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करते, वे यह भी कहते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं है। और यह भी नहीं मानते कि यीशु मनुष्य का उद्धारकर्ता है। शायद आप भी कुछ ऐसे लोगों को जानते होंगे। एक भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने यह बात कही थी, कि ''हे यहोवा, मैं जान गया हूँ, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य तो चलता है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं (यिर्मयाह 10:23)। जबकि मनुष्य के डग और उसकी चाल उसके कंट्रोल में नहीं है तब वह कहीं कहीं गलती कर बैठता है और उससे पाप हो जाता है। इसलिये अपने पापों से बचने के लिये मनुष्य को एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। जब हम सही मार्ग पर चलते-चलते भटक जाते हैं तब हमें मुक्ति की आवश्यकता पड़ती है और जगत को पाप से बचाने वाला केवल एक उद्धारकर्ता है जिसका नाम है प्रभु यीशु मसीह (प्रेरितों 4:12)। यीशु ने कहा था कि, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)। जब मनुष्य पाप में पड़ जाता है तब उसका संबंध परमेश्वर से टूट जाता है क्योंकि बाइबल कहती है तुम्हें तुम्हारे पापों

ने तुमको परमेश्वर से अलग कर दिया है।

जब कोई इस संसार में जन्म लेता है तब वह पापी नहीं होता परन्तु जैसे-जैसे उसे भले बुरे का ज्ञान होने लगता है वह अपने अनुचित कार्यों के द्वारा पापी ठहरता है। प्रेरित यूहन्ना कहता है, ''जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।'' (यूहन्ना 8:34)। प्रेरित पौलुस ने कहा है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों 6:23)। इसका अर्थ यह हुआ है कि मनुष्य पापी है और वह खोया हुआ है, तथा वह अपना उद्धार अपने आप नहीं कर सकता, इसलिये उसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। कोई भी व्यक्ति अपने अच्छे कार्यों के द्वारा उद्धार नहीं पा सकता। इसलिये हमें परमेश्वर के निकट आना है ताकि उसके पुत्र यीशु के द्वारा हम उद्धार पा सके। यीशु के रूप में परमेश्वर ने मनुष्य को अनन्त बलिदान दिया ताकि वह क्रूस पर अपने प्राण को देकर हमारे लिये या पूरे जगत के लिये उद्धार का कारण बन सके। परमेश्वर ने मरियम को चुना था ताकि उसके द्वारा यीशु का जन्म हो सके। (मत्ती 1:21)।

यीशु ने जन्म लिया, एक पाप रहित जीवन जिया तथा मनुष्य के पापों के लिये क्रूस पर बलिदान हुआ। वचन में लिखा है, ''जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इससे प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाए।'' (1 यूहन्ना 4:9)। प्रेरित पतरस कहता है, ''तुम इसीलिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दु:ख उठाकर तुम्हें आदर्श दे गया है।, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।'' (1 पतरस 2:21)। तथा 24 पद में लिखा है, ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बताएं, उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।'' पौलुस लिखता है कि यीशु हमारे पापों के लिये मरा।'' (1 कुरि. 15:3)। गलतियों 1:4 में लिखा है, ''उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें उस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।''

मित्रो, इसके विषय में विचार कीजिये। मनुष्य के पास कोई आशा नहीं थी, वह अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकता, इस प्रकार से वह परमेश्वर का शत्रु बन गया। परन्तु परमेश्वर ने अपने प्रेम और अनुग्रह तथा दया से अपने प्रिय पुत्र को इस संसार में भेजा ताकि मनुष्य का उद्धार हो सके। वास्तव में एक कितना बड़ा दाम मनुष्य के पापों के लिये चुकाया गया।

यदि हम इस उद्धार को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उसमें विश्वास करना है, और यदि विश्वास नहीं करेंगे तो अपने पापों में मरेंगे। (यूहन्ना 8:24)। यीशु ने कहा था, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।'' (मरकुस 16:16)। पतरस ने अपने प्रचार में लोगों से कहा था, ''मन फिराओ और बपतिस्मा लो, यानि अपने पापों की क्षमा के लिये उन्हें मन फिराकर बपतिस्मा लेना था।'' (प्रेरितों 2:38)। यीशु जगत का उद्धारकर्ता हैं और उसने लोगों से कहा था, ''हे

सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने उपर उठा लो; और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे (मत्ती 11:28)।

मसीह का जी उठना

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

यीशु की मौत के बाद उसकी देह को एक कब्र में रख दिया गया था और उस कब्र के ऊपर एक बड़ा पत्थर रख दिया गया था। और उस कब्र पर पहरा बैठा दिया गया था। लेकिन तीसरे दिन यीशु जी उठकर उस कब्र से बाहर आ गया था। (मत्ती 28:1-15; मरकुस 16:1-18; लूका 24:1-49; यूहन्ना 20:1-29; गलतियों 1:1 इफिसियों 1:20)। यीशु का फिर से जन्म नहीं हुआ था, पर वही यीशु जो मारा और कब्र के भीतर गाड़ा गया था, फिर से ज़िन्दा हो गया था। मनुष्य केवल एक ही बार मरता है। बार-बार जन्म लेकर बार-बार नहीं मरता। (इब्रानियों 9:27)। हम सब भी केवल एक ही बार मरेंगे, और एक दिन हम सब जिलाए भी जाएंगे, ताकि हम सब परमेश्वर के न्याय का सामना करें। (यूहन्ना 5:29)

यीशु वास्तव में फिर से जी उठा था। वोह कब्र जिसमें उसे गाड़ा गया था, तीन दिन के बाद खाली पाई गई थी। (प्रेरितों 2:29; मत्ती 28:13)। बहुत से लोगों ने यीशु को जी उठने के बाद देखा था। (प्रेरितों 2:32; यूहन्ना 20:27-28; 1 कुरिन्थियों 15:4-7) यीशु के जी उठने के कारण ही अनेक लोगों के जीवनों में परिवर्तन आ गया था। उन्होंने अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी इस बात की गवाही देने के लिए कि यीशु सचमुच में जी उठा है। (यूहन्ना 7:5; प्रेरितों 1:14; 4:13-21; 5:42)। शाऊल जो यीशु का एक कट्टर विरोधी था, और बाद में पौलुस के नाम से जाना गया था, केवल इसीलिए मसीह का एक अच्छा अनुयायी बना था, क्योंकि जी उठने के बाद यीशु मसीह से उसका सामना हुआ था। 1 कुरिन्थियों 15:8-10; प्रेरितों 9:1-22; 22:1-16)।

हमें चाहिए कि हम जी उठे यीशु पर विश्वास लाएँ (यूहन्ना 20:27; रोमियों 10:9-10)। उसकी मृत्यु और गाड़े जाने और जी उठने में, बपतिस्मा लेकर, उसके साथ एक हो जाएँ। (रोमियों 6:1-6; कुलुस्सियों 2:12; 1 पतरस 3:21)। यीशु के जी उठने के कारण हमें उसमें यह विश्वास करना चाहिए कि वोह वास्तव में प्रभु है। (मत्ती 28:9; 17; रोमियों 1:4; यूहन्ना 20:28)। इस बात में हमें आनन्दित होना चाहिए, कि वोह जी उठा है, क्योंकि इससे हमें आशा मिली है। (मत्ती 28:8; यूहन्ना 20:20; रोमियों 6:9)। उसका जी उठना इस बात का प्रमाण है कि अंतिम दिन में हम सब भी उसी की तरह जिलाए जाएंगे। (रोमियों 8:29; 14:9; 1 कुरिन्थियों 15:20, 23, 51-54; इफिसियों 2:6; कुलुस्सियों 1:18; 2 तिमुथियुस 1:10; प्रकाशित. 1:5, 17-18)। यदि वोह जी नहीं उठता तो आज हमारे पास कोई आशा नहीं होती। (1 कुरिन्थियों

15:14-19)। परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा ही हमें मुक्ति पाने की आशा दी है। (रोमियों 4:25; 1 पतरस 3:21)। यदि हम "मसीह को और उसके जी उठने की सामर्थ्य को समझते हैं" तो हम भी "उसी के समान पुनरुत्थान प्राप्त करके" स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। (फिलिप्पियों 3:10; यूहन्ना 14:19; रोमियों 8:11; 1 कुरिन्थियों 6:14; 2 कुरिन्थियों 4:14; 1 थिस्सलुनीकियों 4:14; 1 पतरस 1:3)।

आरम्भ में कलीसिया न केवल क्रूस पर मसीह की मृत्यु का ही, परन्तु उसके जी उठने का भी प्रचार ज़ोर-शोर से करती थी। (प्रेरितों 2:24, 31; 4:2, 10; 5:30; 13:30-33, 37; 26:22-23)। वास्तव में कलीसिया के प्रचार का मूल उद्देश्य ही मसीह की मृत्यु और उसके जी उठने का प्रचार करना है। (लूका 24:48; प्रेरितों 1:8; 2:32; 3:15; 4:33; 5:32; 10:39-41; 13:47; (1 कुरिन्थियों 11:26)।

जी उठने के बाद यीशु मसीह स्वर्ग पर उठा लिया गया था (लूका 24:50-53; प्रेरितों 1:6-11)। मसीह को स्वर्ग पर उठा लिए जाने के द्वारा परमेश्वर ने मसीह को महिमान्वित भी किया था। (प्रेरितों 2:32-36; 7:56; कुलुस्सियों 3:1,2; इब्रानियों 1:3; 8:1)। क्रूस पर यीशु की मृत्यु का बयान करने के बाद, परमेश्वर द्वारा मसीह को इस प्रकार महिमान्वित करने के बारे में लिखकर पौलुस ने यूं कहा था।

इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वोह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें; और परमेश्वर पिता कि महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले, कि यीशु मसीह ही प्रभु है। (फिलिप्पियों 2:9-11)।

मसीह के सिद्ध जीवन और बलिदान रूपी उसकी मृत्यु के कारण, परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य से मसीह को जिलाकर उसे आकाश और पृथ्वी पर सारा अधिकार दिया था (मत्ती 28:18)। मसीह अपनी कलीसिया का सिर है (इफिसियों 1:20-23; कुलुस्सियों 1:16-18; प्रेरितों 4:11; 1 पतरस 2:7; मरकुस 12:10)। "उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्ता ठहराकर अपने दाहिने हाथ पर उच्च कर दिया" (प्रेरितों 5:31)। इससे तात्पर्य यह है कि मसीह ज़िन्दा है और उसके पास सारा अधिकार है, और वोह हमारे और परमेश्वर के बीच में एक मध्यस्थ है। (रोमियों 8:34; इब्रानियों 1:3; 7:25; 8:1, 35; 1 यूहन्ना 2:1) मसीह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (लूका 1:32, 33; प्रकाशित. 17:14; 19:16)। मसीह आज परेमश्वर के साथ स्वर्ग में है, और हमें अपना मन इसलिए परमेश्वर और स्वर्ग में की आत्मिक बातों पर लगाना चाहिए। (कुलुस्सियों 3:1-2)।

हम अपने बच्चों को क्या सिखायें?

सूज़ी फ्रैड्रिक

छोटे बच्चों को सिखाने का बोझ अक्सर माता पर ही पड़ता है, और इसका साधारण-सा कारण यह है कि, वह पिता से अधिक बच्चों के साथ समय बिताती है। इस प्रश्न के उपर हमें बड़ी गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है: कि

''हम अपने बच्चों को क्या सिखायें?''

हमें उन्हें बाइबल की आरंभिक सच्चाईयों तथा प्रमाणों के विषय में सिखाना चाहिए। ऐसे कुछ प्रमाण यह है जैसे:

(1) परमेश्वर ने इस संसार को तथा इसमें जितनी वस्तुएं है उन्हें बनाया है।

(2) परमेश्वर हम सबसे प्रेम करता है।

(3) परमेश्वर हम सबकी देखभाल करता है।

एक छोटे बच्चे के साथ बात करते हुए शायद हमें इस प्रकार से कहना पड़े: ''उस छोटी-सी चिड़िया को देखो?'' ''परमेश्वर ने इस चिड़िया को बनाया है। परमेश्वर इस चिड़िया की देखभाल करता है।'' या आप इस तरह से भी कह सकती हैं: ''परमेश्वर तुम से प्रेम करता है'', ''वह तुम्हें खाना देता है।'', ''तुम्हें उसने तुम्हारी देखभाल करने के लिये एक माँ दी है।''

जब आपका बच्चा इन आरंभिक बातों को समझने लगे, तब आप उसे बाइबल की कहानियां सुनाना आरंभ करें। छोटे बच्चे बाइबल में दिये गये बच्चों की कहानियां अधिक पसंद करते हैं। जैसे समुएल, जो कि एक प्रीस्ट की सहायता करता था। (1शमुएल 3), नामान के घर में काम करने वाली छोटी लड़की (2 राजा 5:1-14)। यीशु जब छोटा लड़का था (लूका 2:41-52), एक छोटा लड़का जिसने अपना खाना दूसरों के साथ बांटकर खाया (यूहन्ना 6:1-14)। यरीहो की दिवारे गिरने वाली कहानी भी उन्हें बहुत पसन्द आयेगी (यहोशु 6:1-24), दाऊद तथा गोलियाथ (1शमुएल 17), युसुफ़ का जीवन (उत्पत्ति 37-50), तथा यीशु ने जो आश्चर्यक्रम किये थे, यह सब बच्चों को बहुत प्रभावित करते हैं। छोटी-छोटी तस्वीरें बनाकर दिखाने से कहानियों द्वारा बच्चों को सिखाया जा सकता है।

जब आपके बच्चे बड़े होने लगते हैं तब आप उनको पाप के विषय में बताइये तथा उन्हें बतायें कि पापों से क्षमा कैसे मिलती है? कलीसिया क्या है? तथा इसके सदस्य किस प्रकार से बना जा सकता है? मसीही जीवन किस प्रकार से व्यतीत किया जाता है तथा दूसरों के सामने किस प्रकार से अच्छा उदाहरण रखा जा सकता है?

एक और महत्त्वपूर्ण बात के ऊपर ध्यान देना आवश्यक है और वो यह है कि अपने बच्चों को सिखाते समय हम इस बात का ध्यान रखें कि जो बात हम उन्हें सिखा रहे हैं वो वास्तविकता है कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं है। उनके ऊपर यह प्रभाव डालें कि यह एक पक्का प्रमाण है कि जो कुछ वे बाइबल से सीख रहें हैं वो सत्य है। हमें उन्हें कहानियों तथा सत्यों में फ़रक दिखाना चाहिये। कुछ किस्से कहानी धार्मिक रूप से सिखाये जाते हैं तथा कुछ का उद्देश्य केवल मनोरंजन के लिये होता है। परन्तु इनका उद्देश्य चाहे कुछ भी हो, हमारे बच्चों को यह जानने की आवश्यकता है कि मन गढ़ंत कहानियां बनावटी होती हैं, तथा बाइबल में जो घटनाएं घटी हैं वे सत्य पर आधारित हैं।

अन्त में आपको मैं उत्साहित करना चाहुंगी कि आप अपनी बाइबल को स्वयं पढ़ें, क्योंकि यदि आपको जिसके विषय में पता नहीं है उसे आप कैसे सिखायेंगी? बाइबल का अध्ययन कीजिये तभी आप बच्चों को भली-भांति सिखा सकेंगी।

नए नियम में मसीह के राज्य के बारे में की गई प्रतिज्ञाएं

जिम ई. वॉलड्रन

दानिय्येल द्वारा कही गई उक्त बातों के अनुसार, वह राज्य जिसकी स्थापना के विषय में प्रतिज्ञा करके लगभग ईसवी पूर्व 1000 में कहा गया था, कि वह दाऊद के वंश के द्वारा बनाया जाएगा (2 शमूएल 7:12-13), और उसकी स्थापना रोमी राजाओं के दिनों में होनी थी। उसी भविष्यवाणी के पूरा होने का समय जब निकट आ गया था, तो हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> "तिबिरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें वर्ष में परमेश्वर का वचन जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। वह यरदन के आस-पास के सारे प्रदेश में जाकर, पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। जैसे यशायाह भविष्यवक्ता के कहे हुए वचनों की पुस्तक में लिखा है, "जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी बनाओ।" (लूका 3:1-4)।

यूहन्ना ने यीशु का मार्ग तैयार करने के लिये और उसके राज्य के जल्द आने को ध्यान में रखकर मन फिराव का प्रचार किया था। लिखा है:

> "उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा: "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" " (मत्ती 3:1-2)।

यूहन्ना, इसलिये मसीह और उसके आनेवाले राज्य की मनादी कर रहा था; और इसी बात को ध्यान में रखकर वह यहूदियों को मन फिराने के लिये शिक्षा दे रहा था। फिर हम यह भी पढ़ते हैं, कि जब यीशु ने स्वयं भी यूहन्ना से बपतिस्मा ले लिया था, तो परमेश्वर का आत्मा यीशु को जंगल में ले गया था, जहाँ बिना खाए-पीए चालीस दिनों तक शैतान ने यीशु की परीक्षा ली थी, लिखा है:

> "उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना, आरंभ किया, मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।" (मत्ती 4:17)। फिर जब यीशु ने अपने बारह चेलों का चुनाव कर लिया था तो उन्हें यीशु ने यह आज्ञा दी थी कि "इस्राएल की घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना और चलते-चलते यह प्रचार करो: स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" (मत्ती 10:6, 7)।

लूका की पुस्तक में लिखा है, कि यीशु ने सत्तर अन्य चेलों को भी चुना था और उसने उनसे कहा था:

> "बीमारों को चंगा करो और उनसे कहो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।" (लूका 10:9)।

इन सब बातों को पढ़ने के बाद हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं, कि आज जो लोग अन्य लोगों को यह सिखाते हैं, कि यीशु का राज्य पहली शताब्दी में नहीं आया था, पर भविष्य में आनेवाला है, वे वास्तव में यह कह रहे हैं कि यूहन्ना और यीशु और यीशु के प्रेरित उस समय एक गलत शिक्षा का प्रचार कर रहे थे। स्वर्ग का राज्य या परमेश्वर का राज्य एक ही बात है। मत्ती की पुस्तक में जिसे स्वर्ग का राज्य कहा गया है, उसी को मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों में परमेश्वर का राज्य कहकर सम्बोधित किया गया है। और बाइबल में लिखे वर्णन से यह बात बड़ी ही स्पष्टता से समझी जा सकती है कि दानिय्येल और अन्य सभी भविष्यवक्ताओं ने जिस राज्य के आने के बारे में और भविष्य में जिसकी स्थापना के बारे में कहा था और जिस राज्य के आने का प्रचार यीशु ने स्वयं भी किया था, वह स्वर्ग का और परमेश्वर का वही राज्य था जिसकी स्थापना यीशु के उन चेलों के जीवनकाल में ही होनी थी जो उस समय पहली शताब्दी में यीशु के साथ थे। वास्तव में उन्हीं चेलों से यीशु ने स्वयं इस प्रकार कहा था:

> "मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहाँ खड़े हैं, उन में से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।" (मरकुस 9:1)।

यह पढ़ने के बाद, कोई भी व्यक्ति निश्चित रूप से यह जान सकता है और समझ सकता है कि जिस राज्य के आने और जिसकी स्थापना होने के बारे में भविष्यवक्ताओं ने पहले से कहा था, और जिस के निकट भविष्य में स्थापित हो जाने के बारे में यूहन्ना ने (मत्ती 3:2) और स्वयं यीशु ने कहा था (मत्ती 4:17) वह राज्य वही था जिसकी स्थापना यीशु के उन्हीं चेलों के जीवनकाल में होनी निश्चित थी। जिस बात को हम मरकुस 9:1 में पढ़ते हैं, उसी बात को लूका 9:27 में भी पढ़ा जा सकता है, और इस बात को पढ़ने के बाद और उन भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों को पढ़ लेने के बाद जो उन्होंने राज्य के आने के बारे में की थीं, कोई भी व्यक्ति ऐसे लोगों की इस झूठी शिक्षा पर विश्वास नहीं कर सकता कि परमेश्वर का राज्य अभी तक नहीं आया है। आज बहुतेरे लोग ऐसा सिखा रहे हैं, कि परमेश्वर का राज्य अभी तक नहीं आया है, और जब यीशु मसीह दोबारा आएंगे तो वे पृथ्वी पर अपना राज्य उस समय स्थापित करेंगे और एक हज़ार साल तक पृथ्वी पर राज्य करेंगे। पर यह शिक्षा बाइबल की शिक्षा के अनुसार नहीं है। यह एक झूठी शिक्षा है।

परमेश्वर का राज्य या मसीह का राज्य (इफिसियों 5:5) एक ही राज्य है, और वह राज्य यीशु के प्रेरितों के जीवनकाल में ही स्थापित हो गया था। इसी बात का प्रमाण हमें उस वृत्तांत में भी मिलता है जहाँ प्रभु यीशु और प्रेरित पतरस के बीच में यह वार्तालाप हुआ था, जब यीशु ने प्रेरितों से यह प्रश्न पूछा था:

> "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" यीशु ने उसको उत्तर दिया, हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू

पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।" (मत्ती 16:15-19)।

यहाँ एक ख़ास बात हम यह देखते हैं, कि पतरस से कहा गया था कि उसे राज्य की कुंजियाँ दी जाएंगी, और उसे दी भी गई थीं, जैसे कि हम आगे देखेंगे इसी संदर्भ में, जब पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों ने प्रेरितों से पूछा था, कि हम क्या करें? परन्तु इस बात को भी हमें याद रखना चाहिए कि जिस बात को यीशु ने पतरस से कहा था, कि जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खुलेगा, यही बात यीशु ने अपने सभी बारह प्रेरितों से भी कही थी, जैसे कि हम पढ़ते हैं:

"मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।" (मत्ती 18:18)।

अब शिक्षाओं को बांधने और खोलने का यह विशेष अधिकार जो पतरस और सभी अन्य प्रेरितों को दिया गया था इसका अर्थ यह कदापि नहीं था कि वे अपनी मर्ज़ी से कुछ भी बांध और खोल सकते थे या सिखा सकते थे। पर इस काम को पूरा करने के लिये प्रभु ने उन से प्रतिज्ञा करके कहा था कि वह उनके पास पवित्र आत्मा को भेजेगा और वह उन्हें सत्य का मार्ग सिखाएगा और उनकी अगुआई करेगा, जैसा कि हम पढ़ते हैं:

"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।" (यूहन्ना 16:13)।

इसी के साथ, हम यह भी पढ़ते हैं, कि पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी मिला था, लिखा है:

"वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।" (प्रेरितों 2:4)।

यहाँ "अन्य-अन्य भाषा" बोलने का अर्थ यह नहीं है कि वे ऐसे ही कुछ-कुछ ऊल-जलूल बकने लगे थे या मुंह से तरह-तरह की आवाज़े निकालने लगे थे, लोगों को मूर्ख बनाने के लिये, क्योंकि जो लोग वहाँ अनेकों देशों की भाषाएं बोलनेवाले उन प्रेरितों की बातों को उस समय सुन रहे थे उनके बारे में लिखा है कि "वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं? फिर क्यों हम में से हर एक अपनी-अपनी जन्म-भूमि की भाषा सुनता है?" (प्रेरितों 2:7, 8)।

यहाँ जो आश्चर्यक्रम हो रहा था वह उन प्रेरितों के द्वारा हो रहा था जिन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ मिली थी। वे दिखावा नहीं कर रहे थे, बेकार का शोर नहीं मचा

रहे थे बल्कि उनके द्वारा वास्तव में परमेश्वर का पवित्र आत्मा बोल रहा था, जैसे कि हम पढ़ते हैं, कि, "जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें सामर्थ दी, वे **अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।"**

किन्तु, आज अनेकों लोग ऐसे हैं जो परमेश्वर के वचन में लिखे इसी वृत्तांत की नकल करने का प्रयत्न करते हैं; वे लोगों को धोखा देने के लिये ऐसा पाखण्ड करते हैं कि मानो उन पर भी प्रेरितों की ही तरह पवित्र आत्मा आ गया है, और वे अपने गलों से तरह-तरह की आवाज़े निकालकर ऊल-जलूल शब्दों को बकते हैं, ताकि लोग ऐसा समझें कि जैसे कि मानों वे भी पवित्र आत्मा की सामर्थ से बोल रहे हैं। पर क्या कोई समझ पाता है जो वे बोल रहे हैं?

पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर लेने के बाद, पवित्र आत्मा स्वयं प्रेरितों की अगुवाई करता था और उन्हें सत्य का मार्ग दिखाता था, जैसे कि प्रेरित पतरस ने लगभग तीस वर्ष बाद लिखकर कहा था:

> "परमेश्वर की और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शांति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए। क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।" (2 पतरस 1:2-3)।

अपनी मृत्यु से एक ही रात पहले परमेश्वर से प्रार्थना करके, यीशु ने कहा था, कि वे सारे लोग जो उसमें विश्वास लाएंगे वे सब उसमें एक हों। हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> "मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझमें हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।" (यूहन्ना 17:20-21)।

यीशु की इस प्रार्थना का सम्बंध पतरस द्वारा कही उसी बात से है, जैसा कि उसने लिखकर कहा था, कि "ईश्वरीय सामर्थ्य" ने सब कुछ हमें उसी की "पहचान" के द्वारा दिया है। यीशु की इस प्रार्थना के द्वारा हमें यह सीखने को मिलता है, कि प्रभु वास्तव में ऐसा चाहते हैं, कि वे सब लोग जो उनके प्रेरितों के द्वारा लिखे उनके सुसमाचार को स्वीकार करके उनके पास आते हैं वे सब के सब यीशु मसीह में एक हों। हमें आज यह समझने की आवश्यकता है कि यीशु के अनुयायीयों में फूट या साम्प्रदायिकता एक ऐसी चीज़ है जिस से प्रभु घृणा करते हैं, और यही एक ऐसा कारण है जिसकी वजह से आज अनेकों लोग संसार में परमेश्वर के एकलौते पुत्र यीशु मसीह में विश्वास नहीं करते। (यूहन्ना 1:1, 14; 3:16)।

उद्धार की योजना

जेम्स ई. प्रीस्ट

परमेश्वर का अंतिम समाधान एक ऐतिहासिक वास्तविकता बन गया, जब उसने आत्मिक पिता के रूप में, सारी मनुष्य जाति के पापों के लिए शुद्ध, अमूल्य, सिद्ध बलिदान के रूप में अपने पुत्र को भेंट कर दिया था। इस बलिदान पर चर्चा करना कठिन है। इसमें इतने गुण हैं कि हम उनकी व्यापकता का वर्णन नहीं कर सकते। यह उस प्रेम को दिखाता है जिसकी सीमा को मापा नहीं जा सकता। यह मनुष्य की तुलना में जो पाप को व्यक्तित्व की त्रुटि के रूप में देखता है परमेश्वर की नजर से पाप की शक्ति और आतंक को दिखाता है। यह हमें परमेश्वर के अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य होने के दृढ़ निश्चय से प्रभावित करता हैं और यह किसी तरह अपने पाप से निकलने के हमारे घमण्ड को समाप्त कर देता हैं यह हमें एक पिता की ईमानदारी से स्तब्ध करता है जो अपने पुत्र को बलिदान के रूप में भेंट करता है ताकि वह पवित्र और धर्मी रहकर भी उसे ग्रहण करने वालों और उसके पुत्र के सामने अपने आपको समर्पित करने वालों के पाप क्षमा कर सके।

आत्मिक पिता के अपने पुत्र के साथ इतने घनिष्ट संबंध की बात पवित्र शास्त्र में बड़े विस्तार से बताई गई है। हम पढ़ते हैं कि जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले, (गलतियों 4:4, 5)। मरियम नाम की कुंवारी से यीशु के अविश्वसनीय जन्म के द्वारा ही परमेश्वर के पुत्र का स्त्री से जन्म होना था। स्वर्गदूत द्वारा मरियम को बताया गया था, कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा (लूका 1:35)।

यीशु का मूसा की व्यवस्था के प्रभावी होने के समय केवल जन्म ही नहीं हुआ था बल्कि वह जीवनभर मूसा की व्यवस्था के अधीन ही रहा था। परन्तु, अपनी बलिदानी मृत्यु में उसने विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उस क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है (कुलुस्सियों 2:14; देखिए इब्रानियों 10:5-10)।

मसीह का बलिदान केवल पुरानी व्यवस्था का पूरा होना ही नहीं, बल्कि यह उनके लिए छुटकारे का साधन भी था जो विश्वास योग्य होकर इसमें जीवन बिता रहे थे। हम पढ़ते हैं-

और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें (इब्रानियों 9:15)।

और यह भेंट इसलिए भी दी गई थी, ''कि हमें पुत्र होने के पूरे अधिकार मिल सकें'' (इब्रानियों 12:7-11)।

यीशु के सांसारिक जीवन का अध्ययन करते हुए, हम अपने स्वर्गीय पिता के साथ उसके घनिष्ठ संबंध से प्रभावित होते हैं। जब वह बालक ही था, तब वह जानता था कि उसे अपने पिता के काम में लगे रहना आवश्यक है (लूका 2:29)। बपतिस्मा लेकर यीशु द्वारा अपनी व्यक्तिगत सेवकाई का आरंभ करने के समय, उसका पिता उसे बड़े ध्यान से देख रहा था। उसने अपने पुत्र के लिए अपने प्रेम और उसमें अपने आनन्द की घोषणा की थी (मत्ति 3:17)। यीशु के रूपान्तरण के समय उसके पिता की आवाज ने पुनः जोर देकर अपने पुत्र के लिए अपने प्रेम और उसमें अपने आनन्द को यह जोर देकर कहा था कि ''इसकी सुनो'' (मत्ती 17:5)।

यीशु की प्रार्थनाओं से हमें उसके अपने पिता के साथ घनिष्ट संबंध का पता चलता है। उसकी सबसे बड़ी प्रार्थना सृष्टि की रचना से पहले पिता के साथ उसकी महिमामय उपस्थिति को दिखाती है और यह भी कि पृथ्वी पर उसने पिता की महिमा कैसे की थी। उसने उस अनन्त प्रेम के बारे में भी बात की जो उसका पिता उससे रखता था और उस प्रेम को अपने अनुयायियों में भी होने की अपनी इच्छा की थी (यूहन्ना 17, ध्यान दें पद 5, 24, 26)। यीशु ने अपने गहन अनुभवों में अपने पिता की इच्छा को पूरा होने की प्रार्थना की। क्रूस पर मृत्यु के निकट पहुंचकर, उसने प्रार्थना की, हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा सामने से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो (मत्ती 26:39)। क्रूस पर लटके हुए उसने प्रार्थना की, हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं? फिर मरते हुए, उसके अंतिम शब्द थे हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं (लूका 23:34, 46)। हमें समझ आती है कि परमेश्वर सचमुच यीशु मसीह का आत्मिक पिता था।

यद्यपि यीशु ने मूसा की पुरानी वाचा (व्यवस्था) को पूरा किया और अपनी मृत्यु के द्वारा एक नया नियम स्थापित किया, परन्तु वह पुरानी वाचा के अधीन ही जीया और मरा, इसका अर्थ है कि दाऊद की मानवीय राजसी वंशावली के एक यहूदी के रूप में (लूका 3:23-31), जिसे इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया (मत्ती 15:24) था, वह अपने ही लोगों को सिखा रहा था और उनमें प्रचार कर रहा था जो मूसा की व्यवस्था के अधीन थे। (कभी-कभी यीशु अपने पास आने वाले अन्य जातियों को भी ग्रहण करता था (उदाहरणार्थ मत्ती 15:21-28)। इसलिए पिता के बारे में उसकी अधिकतर शिक्षाएं उन लोगों के लिए थीं जो परमेश्वर को चयनात्मक पिता के रूप में जानते थे। उसने उन में कई बार परमेश्वर को तुम्हारा पिता कहकर सम्बोधित किया था (मत्ती 5:16, 45, 48, 10:29)।

जैसे कि हमने देखा है, परमेश्वर पाप में डूबी मनुष्य जाति के साथ अपने व्यवहार में एक अधिक व्यापक युग को सामने ला रहा था। हर किसी के लिए उसके पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा आत्मिक पिता के रूप में परमेश्वर को जानने का समय पूरी तरह से आ चुका था। इसलिए यह जानकर आश्चर्य नहीं होता कि यीशु ने अपने चेलों को उनके लिए अपने पिता की इच्छा को पूरा करने का महत्व बताया

(मत्ती 7:21)। उसने जोर देकर कहा कि पिता रूप में परमेश्वर के साथ और भाई के रूप में उसके साथ पारिवारिक संबंध के लिए पिता की यह आज्ञाकारिता आवश्यक है (मत्ती 12:48-50)। पिता घुसपैठियों को इस पारिवारिक दायरे को तोड़ने की अनुमति नहीं देगा (मत्ती 15:13)।

यीशु ने परमेश्वर को कई बार अपना पिता कहा। उसने विशेष संबंधवाचक सर्वनाम मेरा पिता के साथ अपने अनुयायियों में इस बात पर जोर दिया (मत्ती 18:35, 20:23)। उसने उन्हें भी सिखाया जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा (मत्ती 10:32, 33)। इस प्रकार की शिक्षाओं से जो कि बहुत सी थीं, उसके चेलों को विशेषकर उसके प्रेरितों को चौकस हो जाना चाहिए था, कि अपने पिता के रूप में परमेश्वर के बारे में उसका बताना अवश्य ही एक अलग बात थी।

आरंभ से ही, यीशु की माता, मरियम इस भेद को जानती थी। वह उसके परमेश्वर की ओर से होने के विषय में जानती थी। निश्चय ही वह उसके चमत्कारी जन्म के तथ्य को जानती थी। उसका पति यूसूफ, जो एक धर्मी पुरुष था, मरियम के गर्भ के बारे में बहुत ही सावधान था। इसके अतिरिक्त, यीशु युवावस्था में, मरियम ने उसे यूसुफ का नाम लिए बिना अपने पिता की बातें करते सुना था। और उसकी माता ने ये सब बातें अपने मन में रखीं (मत्ती 2:8-25 लूका, 1:26-38, 2:41-52)।

शायद यीशु के अनुयायियों ने अपने पिता के बीच उसके विलक्षण संबंध को समझ लिया था। परन्तु ऐसा लगता है कि उन्हें यह समझ बहुत धीरे-धीरे आई थी। आखिर क्या परमेश्वर उनका भी पिता नहीं था? क्या परमेश्वर ने इस्राएल को अपना पुत्र नहीं कहा था (यिर्मयाह 31:9)। क्या यीशु ने जैसे सिखाया था कि वे परमेश्वर को अपना पिता कह सकते थे? (मत्ती 6:9 से)। हां, वे कह सकते थे, और उन्होंने कहा भी।

हमने इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर को अपने पिता के रूप में देखने के बारे में पुराने नियम का अध्ययन किया है। हम यह भी जानते हैं कि यीशु के समय के यहूदी धर्म में पिता के रूप में परमेश्वर की सुपरिचित धारणा मिलती थी।

परन्तु यहूदियों के लिए परमेश्वर के साथ यीशु के विलक्षण पिता/पुत्र संबंध का पूरा प्रभाव समझ पाना कठिन था। उन्हें कैसे पता चल सकता था कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु उन सबसे अलग हैं जिन्हें परमेश्वर के पुत्र कहा जाता था? क्या उससे पहले महान अगुओं को उसके पुत्र नहीं कहा जाता था? (2 शमूएल 7:14, भजन 89:26, 27)। हां। फिर तो हमें यह जानकर हैरान नहीं होना चाहिए कि उनके लिए पूर्ण सत्य को जानने के लिए आत्मिक पिता परमेश्वर की ओर से प्रकाशन के बिना ऐसा नहीं हो सकता था।

एक उत्तम वाचा

(इब्रानियों 7:11-8:13)

कोय रोपर

हमारी दिलचस्पी उत्तम या बेहतर बातों में होती है। हम में से कुछ लोग उत्तम नौकरी, या उत्तम घर या उत्तम कपड़े चाहते है।। हम उत्तम बातों को पसंद करते हैं इसलिए हमें इब्रानियों 8 की उत्तम बातों में दिलचस्पी होनी चाहिए। (अध्याय को पढ़ें, विशेषकर 8:6) पर ध्यान दें।

पर उन याजकों से बढ़कर सेवा यीशु को मिली है क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा है, जो उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बांधी गई हैं। यीशु के पास और भी उत्तम या उत्तम सेवकाई है। उसी के कारण हमें उत्तम वाचा मिली है जो हमें उत्तम प्रतिज्ञाएं देती हैं और इब्रानियों 8 अध्याय में मुख्य शब्द और इब्रानियों की पूरी पुस्तक में मुख्य विचार उत्तम की है। मसीह के ढंग की हर बात मूसा की व्यवस्था से उत्तम है। इब्रानियों की पुस्तक का संदेश है कि नया नियम एक उत्तम वाचा प्रदान करता है। इस बात का क्या अर्थ है और हमारे जीवन के ढंग के लिए इसका क्या अर्थ है?

उत्तम वाचा के होने का क्या अर्थ है?

इसका क्या अर्थ नहीं है। यह समझने के लिए बाइबल कहती है कि नया नियम एक उत्तम वाचा है तो इसके कहने का क्या अर्थ होता है, हमें यह समझना आवश्यक है कि इसके कहने का क्या अर्थ नहीं है।

बुरी व्यवस्था नहीं है। नई वाचा उत्तम है पर इसका अर्थ यह नहीं है कि पुरानी वाचा बुरी थी। उत्तम के लिए अच्छा का तुलनात्मक रूप है। यह कहना कि नई वाचा उत्तम या बेहतर है, यह संकेत देता है कि पुरानी वाचा अच्छी थी। पौलुस ने कहा है कि व्यवस्था पवित्र और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है (रोमियों 7:12)। पुरानी व्यवस्था बुरी नहीं थी, बल्कि यह एक अच्छी व्यवस्था थी।

परमेश्वर द्वारा दी गई। इस तथ्य का कि नई वाचा उत्तम है अर्थ यह नहीं है कि पुरानी वाचा परमेश्वर की ओर से नहीं दी गई थी (देखें निर्गमन 20)। पुरानी वाचा का देने वाला परमेश्वर ही है। यह भी ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा दी गई थी।

अन्य समकालीन व्यवस्थाओं से बेहतर। फिर यह कहने का कि नई वाचा उत्तम है, अर्थ यह नहीं है कि पुरानी वाचा अपने समय के अन्य समयों से बेहतर नहीं थी और व्यवस्थाएं भी थीं और उनमें से कुछ व्यवस्थाएं तो मूसा के समय से पहले की थी। उनमें कुछ नियम पुराने नियम से मिलते-जुलते थे। परन्तु मूसा की व्यवस्था किसी भी समकालीन नियम या कायदे से बेहतर थी।

अपना उद्देश्य पूरा किया। इसके अलावा इस तथ्य का कि नई वाचा उत्तम है, अर्थ यह नहीं है कि पुरानी वाचा ने अपने उद्देश्य को पूरा नहीं किया। मूसा की व्यवस्था का एक उद्देश्य था और पौलुस ने कहा कि यह मसीह तक पहुंचाने को

हमारी शिक्षक हुई (गलातियों 3:23) और इसने अपने हटाए जाने से पूर्व उस उद्देश्य को पूरा कर लिया था। पौलुस ने आगे कहा, ''परन्तु जब विश्वास आ चुका है तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे'' (गलातियों 3:25)।

नैतिक नियमों में कमी नहीं। इसके अलावा यह कहने का कि नई वाचा उत्तम है, अर्थ यह नहीं है कि पुरानी वाचा का नैतिक नियम नई वाचा के नियम से किसी प्रकार अलग था। इस बात पर कई बार हम नये नियम की बात को समझ नहीं पाते। उदाहरण के लिए पुराना नियम केवल बाहरी पापों का ध्यान रखता है। उदाहरण के लिए तू लालच न करना की आज्ञा पर विचार करें (निर्गमन 20:17)। यह सच है कि मत्ती 5 अध्याय में यीशु ने अपने श्रोताओं को उससे अलग बात कही, जो उन्होंने सुन रखी थी, परन्तु उसने मूसा की व्यवस्था से अपनी शिक्षाओं को अलग नहीं किया, बल्कि यह उसकी शिक्षा को रब्बियों की शिक्षा से और उससे अलग कर रहा था, जो लोग मानने लगे थे।

इसका क्या अर्थ है। यह समझने के लिए कि उत्तम वाचा होने का क्या अर्थ है, नई वाचा की उन सभी विशेषताओं पर ध्यान करें, जो इब्रानियों का लेखक कहता है कि उत्तम हैं।

उत्तम महायाजक। मसीह युग में हमारा एक उत्तम महायाजक है। इब्रानियों 8 के पहले भाग में इस तथ्य पर जोर दिया गया है। यीशु मसीह हमारा ऐसा महायाजक है (8:1) जो असली मन्दिर में सेवा करते हुए परमेश्वर के दाहिने हाथ है। वह पुरानी वाचा के याजकों से अलग है (8:1-5)। याजकाई की उसकी सेवकाई उसकी सेवकाई से बढ़कर (8:6) है, जिस कारण वह एक उत्तम महायाजक है (7:7-12 भी देखें)।

मसीह उत्तम महायाजक क्यों है? क्योंकि वह पवित्र और निष्कलंक है (7:26, 27; 4:15 भी देखें) उसने सदा के लिए एक ही पर्याप्त बलिदान चढ़ा दिया (7:27)। उसे ईश्वरीय शपथ के द्वारा हमारा महायाजक बनाया गया (7:28) और वह अपनी याजकाई को अपने तौर पर बनाए रखता है (7:23-25)।

उत्तम वाचा। आज हम एक उत्तम वाचा में रहते हैं (8:6; 7:22)। इब्रानियों की पुस्तक इस बात पर जोर देती है कि नई वाचा पुरानी वाचा से उत्तम है। 8:7, 8 में लेखक ने तर्क दिया कि पुरानी वाचा में कमी होने के कारण हमारे लिए एक नई वाचा का होना आवश्यक था। इसमें क्या कमी थी? इसके नियमों में कमी नहीं थी परन्तु इसके बलिदानों से पाप सचमुच में उठाए नहीं जा सकते थे, इसलिए इब्रानियों 8:9-12 में लेखक ने यिर्मयाह 31:31-34 से एक भविष्यवाणी उद्धृत की, जिसमें नई वाचा के आने की भविष्यवाणी थी। उस नई वाचा में नियम पत्थरों पर दिए जाने के बजाय लोगों के हृदयों पर लिखे जाने थे। इस वाचा में लोगों को एक-दूसरे को परमेश्वर के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं होनी थी, क्योंकि इस वाचा में हर किसी को पहले ही उसका पता होना था। परन्तु नई वाचा के अधीन लोगों के लिए मुख्य फायदा यह होना था कि परमेश्वर ने उनके अधर्म के विषय में दयावन्त होना था और उनके पापों को फिर स्मरण न करना था (8:12)।

पुरानी वाचा के बलिदान पापों को मिटा नहीं सकते थे (10:4)। जबकि नई वाचा का बलिदान मिठा सकता था। पापों को हटाने की उन बलिदानों की अक्षमता ने पुरानी वाचा को मृत्यु की वह वाचा (2 कुरिन्थियों 3:7) बना दिया और इसकी निर्बल और निष्फल की बात करना संभव बना दिया (7:18, 19) नई वाचा एक उत्तम वाचा है क्योंकि इसके अधीन लोगों को, मसीह के बलिदान के द्वारा क्षमा किया जा सकता है।

उत्तम प्रतिज्ञाएं नई वाचा एक उत्तम वाचा है, क्योंकि वह उत्तम प्रतिज्ञाओं पर बांधी गई थी (8:6)। पुराने नियम के समयों में रहने वाले लोग परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के अंत में पूरा होने को देखने के लिए जीवित नहीं थे (11:13; 11:39, 40)। उन्होंने उन प्रतिज्ञाओं को धुंधला सा देखा पर उन्हें पाने का उनके पास कोई तरीका नहीं था। दूसरी ओर हम उन प्रतिज्ञाओं को स्पष्ट देख सकते हैं और उन्हें पा सकते हैं। वे कौन-सी प्रतिज्ञाएं हैं, जिनका हम आनन्द लेते हैं, जो नई वाचा को उत्तम बना देती है? इब्रानियों 8:12 के अनुसार एक बात यह है कि हमें क्षमा का वह आश्वासन मिला है जो पुरानी वाचा के अधीन लोगों के लिए नहीं है। एक और कारण, मसीह की मृत्यु के कारण हमें अनन्त मीरास (9:15) की प्रतिज्ञा मिली है।

उत्तम प्रवक्ता इस युग में एक उत्तम प्रवक्ता, इब्रानियों 1:1, 2 को परमेश्वर के पुत्र अर्थात मसीह से जो आज परमेश्वर का प्रवक्ता है, पुराने नियम के समयों के उन भविष्यवक्ताओं से अलग करता है, जो परमेश्वर के लिए बात करते हैं। वह स्वर्गदूतों से उत्तम प्रवक्ता है (1:4), जिनके द्वारा मूसा मध्यस्थता करता है (2:2) और वह मूसा से बड़ा अर्थात व्यवस्था का देने वाला है (3:3-6)।

उत्तम आशा इस युग में हमें एक उत्तम आशा मिली है (7:19)। हमारी आशा उत्तम क्यों है? शायद इसलिए कि यह पर्दे के भीतर प्रवेश करती है (6:18-20)। हमारी आशा हमारे स्वर्गीय प्रतिफल से जुड़ी है। पुरानी वाचा के अधीन लोगों को क्या आशा थी? मुख्यतया उनकी आशा सांसारिक प्रतिज्ञाओं पर आधारित थी न कि स्वर्गीय प्रतिफल पर। कई बार वे परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन की संभावना को देखते थे (देखें 11:16, 3:0), परन्तु केवल धुंधला सा जबकि उनके विपरीत हमें स्वर्ग की स्पष्ट प्रतिज्ञाएं मिली हैं। हम एक उत्तम सम्पत्ति (10:34) अर्थात स्वर्ग में प्रतिफल की राह देख सकते हैं।

उत्तम बलिदानः नई वाचा को उत्तम बनाने वाली सबसे महत्वपूर्ण बात शायद इसका उत्तम बलिदान है (9:23)। इब्रानियों 9:13, 14 कहता है कि जानवरों के बलिदानों से शरीर पवित्र होता है, अन्य शब्दों में से संस्कार के शुद्धिकरण के द्वारा, परन्तु मसीह का लहू उससे कहीं अधिक करता है क्योंकि यह विवेक को शुद्ध करके पापों को क्षमा करता है। नई वाचा का मसीह का बलिदान इस बात में उत्तम था कि यह पर्याप्त था यानी इसने पापों को हटा दिया (देखें 9:13, 14, 10:4)। और इस कारण यह केवल एक ही बार दिया गया (7:27, 9:25, 26, 12:24 भी देखें)।

उत्तम तम्बू मसीही युग में एक उत्तम वेदी अर्थात सच्चा तम्बू जिसे किसी

मनुष्य ने नहीं वरन प्रभु ने खड़ा किया (8:2, 5, 9:11, 24 भी देखें 10:1) है। पवित्र शास्त्र यह सुझाव देता है कि तम्बू या मन्दिर सच्चे तम्बू की नकल या प्रतिबिम्ब ही था। उत्तम तम्बू कलीसिया का था, जिसमें आज परमेश्वर के लोग आराधना करते है।

हमारे जीवन के लिए उत्तम वाचा का क्या अर्थ है?

पुरानी वाचा का मिटाया जाना। हमारे पास एक नई वाचा है, जिसके कारण पुरानी वाचा को हटा लिया गया है। दोनों वाचाओं की अपनी तुलना को इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने 8:13 में इन शब्दों के साथ समाप्त किया, नई वाचा की स्थापना से उसने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराया और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है। मसीह के पांच सौ साल से अधिक पहले यिर्मयाह के लिखने के समय पुराना नियम जीर्ण और अलोप होने को तैयार हो रहा था। नये नियम के समयों तक परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों को समझ थी कि इसे हटा दिया गया (उदाहरण के लिए देखें इब्रानियों 7:11, 12)। इसलिए हमें उन आज्ञाओं के लिए जो सीधे हम पर लागू होती है, पुराने नियम की ओर नहीं देखना चाहिए, न ही हम पुराने नियम के समय में की जाने वाली बातों, के द्वारा अपने धार्मिक कामों को सही ठहराने की कोशिश करें।

वफादारी के लिए प्रोत्साहन हमें इस बात के लिए धन्यवाद करना चाहिए कि हम एक उत्तम वाचा के अधीन रहते है। इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को उन आशिषों की बात याद दिलाकर जिसका वे उत्तम वाचा के अधीन रहते हुए आनन्द ले रहे थे, वफादार रहने के लिए प्रोत्साहित होना चाहिए, क्योंकि हम उस उत्तम वाचा के अधीन हैं। अपने आभार के कारण हमें उससे कहीं अधिक करना आवश्यक है जो पुरानी वाचा के अधीन है।

बड़े दण्ड की संभावना हमें याद रखना आवश्यक है कि हमारी बड़ी आशिषें हम पर बड़ी जिम्मेदारियां डालती हैं। यदि हम नई वाचा की आज्ञा नहीं मान पाते तो हम उससे भी बड़े दण्ड के योग्य होंगे, जो पुरानी वाचा के अधीन आज्ञा न मानने वालों को मिलता था (10:26-29; 2:2, 3)।

उद्धार की योजना

सुनना ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)।

विश्वास करना ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:16)।

मन फिराना ''इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है'' (प्रेरितों 17:30)।

अंगीकार करना ''क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है'' (रोमियों 10:10)।

बपतिस्मा लेना ''पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

''और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है, (उससे शरीर का मैल दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)'' (1 पतरस 3:21)।

विश्वासी जीवन जीना

''जो दु:ख तुझ को झेलने होंगे, उनसे मत डर, क्योंकि देखो, शैतान तुम में से कितनों को जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ, और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा, प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

मसीह के पास हम उसके वचन की आज्ञा मानने के द्वारा ही आ सकते हैं। जो लोग यह सोचते हैं कि मसीह में विश्वास करके या उससे पापों की क्षमा मांगकर उद्धार हो सकता है, अफसोस है कि वे गुमराह हैं। जब तक हम सुनते नहीं है, विश्वास नहीं करते हैं, मन नहीं फिराते हैं, अंगीकार नहीं करते हैं, पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा नहीं लेते हैं, तब तक हमने उद्धार की योजना के सुसमाचार को अभी तक माना नहीं है।

दस आज्ञाएं

पौलुस बताता है कि व्यवस्था का थीम क्या था और इस ने कब तक रहना था। गलातियों 3:19 कहता ''वह तो... बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी।'' उसने पहले बताया था कि, ''वह वंश मसीह है'' (आयत 16)। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यवस्था केवल मसीह के आने तक के लिए बनाई गई थी। पौलुस कहता है कि व्यवस्था ''मसीह तक पहुंचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है'' (आयत 24)। फिर वह कहता है, ''हम अब शिक्षक के अधीन न रहे'' (आयत 25)। व्यवस्था शिक्षक थी और अब हम उस व्यवस्था के अधीन नहीं है।

ऐसी बहुत-सी आयतें हैं जो बताती हैं कि मसीह के क्रूस पर व्यवस्था को हटा दिया गया था। ''और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया

है'' (कुलुस्सियों 2:14)। ''...तो व्यवस्था का भी बदलना अवश्य है। ...इस प्रकार, पहली आज्ञा निर्बल और निष्फल होने के कारण लोप हो गई (इसलिए कि व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि नहीं की) और उसके स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं। ...प्रभु कहता है, देखो, ... मैं.... नई वाचा बांधूगा... वह नई वाचा का मध्यस्थ है'' (इब्रानियों 7:12; 7:18-19; 8:8; 9:15)। क्रूस पर मसीह की मृत्यु के समय पुरानी व्यवस्था को हटा दिया गया था ताकि नई व्यवस्था को लागू किया जा सके (इब्रानियों 10:9)।

दस आज्ञाएं उस व्यवस्था का जिसे ''हटा दिया'' गया था, भाग थीं ये दस आज्ञाएं जो पत्थर की दो पट्टिकाओं पर लिखी गई थीं (व्यवस्थाविवरण 4:12-13), मृत्यु और दण्ड की सेवकाई थी और हटा दी गई थी। धर्म की सेवकाई अर्थात मसीह की व्यवस्था जो महिमा में दस आज्ञाओं से बढ़कर है आज हमारे मानने के लिए बरकरार है (2 कुरिन्थियों 3:6-11)।

मसीह की मृत्यु के बाद सैद्धांतिक रूप में सभी दस आज्ञाओं में से एक को छोड़ सब को दोहराया गया है।

1. तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना (प्रेरितों 17:23-31; रोमियों 1:23-25; 1 कुरिन्थियों 8:4, 6)।
2. तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना (प्रेरितों 14:11-17; 1 कुरिन्थियों 6:9-10; 10:7, 14, 19, 20; 2 कुरिन्थियों 6:16, 17; गलातियों 5:19-21; इफिसियों 5:3-6; कुलुस्सियों 3:5; 1 यूहन्ना 5:21; प्रकाशितवाक्य 21:8; 22:15)।
3. तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना (यूहन्ना 5:12)।
4. विश्राम दिन (यानी सब्त के दिन) को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। केवल यही आज्ञा है जिसे मसीह की मृत्यु के बाद दोहराया नहीं गया। सब्त नये नियम की कलीसिया की आराधना का दिन नहीं था। कलीसिया प्रभु-भोज खाने और चंदा अलग करने के लिए सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा हुआ करती थी (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:1-2)। सब्त को मनाने के लिए व्यर्थ कहा गया था (गलातियों 4:10-11; कुलुस्सियों 2:16-17)।
5. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना (इफिसियों 6:13; कुलुस्सियों 3:20)।
6. तू खून न करना (रोमियों 13:9; 1 यूहन्ना 3:15; प्रकाशितवाक्य 21:8; 22:15)।
7. तू व्यभिचार न करना (रोमियों 13:9; 1 कुरिन्थियों 6:13-18; गलातियों 5:19-231; इफिसियों 5:376; कुलुस्सियों 3:5; 1 थिस्सलुनीकियों 4:4-7; इब्रानियों 13:4; प्रकाशितवाक्य 21:8; 22:15)।

8. तू चोरी न करना (रोमियों 13:9; 1 कुरिन्थियों 6:10-11; इफिसियों 4:28)।
9. तू अपने पड़ोसी के विरूद्ध झूठी गवाही न देना (रोमियों 13:9)।
10. तू लालच न करना (रोमियों 7:7; 13:9; 1 कुरिन्थियों 6:10; इफिसियों 5:5; कुलुस्सियों 3:5; 1 कुरिन्थियों 6:10; इफिसियों 5:5; कुलुस्सियों 3:5; 1 तीमुथियुस 6:9-11, 17; इब्रानियों 13:5)।

दस आज्ञाओं के हटा दिए जाने के कारण परेशान न हों। याद रखें कि एक नई वाचा दे दी गई है। जैसा कि हम ने देखा है, इस नई वाचा में दस आज्ञाओं की दस में से नौ बातें शामिल हैं और उन्हें विस्तार दिया गया है। अब वे इस कारण लागू नहीं हैं कि वे पुरानी वाचा में हैं, बल्कि इस कारण प्रभावी हैं कि वे नई वाचा में है।

चौथी आज्ञा को कभी दोहराया नहीं गया क्योंकि मसीही लोगों को सब्त का दिन मानने की कभी आज्ञा नहीं दी गई। नये नियम के समय में कभी भी किसी पर सब्त को तोड़ने के पाप का दोष नहीं लगाया गया। मसीही लोग सप्ताह के पहले दिन मसीह के जी उठने को मनाते थे न कि सब्त के दिन मिस्र में से निकलने को।

विश्राम का दिन

जॉन स्टेसी

विश्राम दिन (सबत का दिन) को मानने की आज्ञा निर्गमन 20:10 में यहूदियों को दी गई थी, और इस से पहले इस दिन को कोई नहीं मानता था। वहां मूसा ने लोगों से इस प्रकार कहा था, ''परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उसमें न तो तू किसी भांति का काम-काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेसी जो तेरे फाटकों के भीतर हो।'' यह आज्ञा यहूदियों को छोड़ अन्य लोगों के लिये नहीं थी। जिन लोगों को परमेश्वर बंधुवाई से छुड़ाकर लाया था केवल उन्हीं लोगों के लिये इस आज्ञा को दिया गया था। व्यवस्थाविवरण 5:15 में यूं कहा गया था, और इस बात को स्मरण रखना के मिसर देश में तू आप दास था। और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया, इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है।'' इस से पहले, उत्पत्ति से लेकर लगभग 2500 वर्षों के मनुष्य के इतिहास में विश्राम दिन का कोई उल्लेख नहीं है इस वाचा को यहूदियों के पूर्वजों से नहीं परन्तु इस्राएलियों के वंशजों से बांधा गया था। व्यवस्थाविवरण 5:3 में लिखा है कि इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम ही से बांधा, जो यहां आज

के दिन जीवित हैं।''

विश्राम दिन (सबत का दिन) सप्ताह का सातवां दिन था। व्यवस्थाविवरण 5:14 के अनुसार, ''परन्तु सातवां दिन तेरे यहोवा के लिए विश्रामदिन है।'' इसी पद में आगे यूं लिखा है, कि इस दिन में यहूदियों को कोई काम न करके केवल विश्राम ही करना था। और जिस प्रकार हमने व्यवस्थाविवरण 5:15 से देखा है, कि यह दिन उनके लिये यक यादगार का दिन था, जिसमें उन्हें स्मरण करना था कि परमेश्वर उन्हें मिसर से निकालकर लाया था। किन्तु हम जानते हैं कि इस्राएलियों ने परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन किया था, और इस कारण परमेश्वर ने लोगों को उस पुरानी वाचा के स्थान पर एक नई वाचा को, जिसमें विश्रामदिन को मानने की आज्ञा नहीं होगी, देने की प्रतिज्ञा की थी। यिर्मयाह 31:31 के अनुसार परमेश्वर ने यूं कहा था, ''ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बांधूगा।'' तब परमेश्वर ने, होशे 2:11 में कहा था, ''मैं उसके पर्व, नए चांद और विश्रामदिन आदि सब नियत समयों के उत्सवों का अन्त कर दूंगा।'' कुलुस्सियों 2:14 के अनुसार जब मसीह क्रूस पर मरा था तो उसने मूसा की व्यवस्था (पुराने नियम) का अन्त कर दिया था। वहां लिखा है, ''अरे विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया।'' इसी अध्याय में 16 पद में पौलुस ने कहा था कि, इसलिये खाने-पीने या पर्व या नए चांद या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करें।''

आज प्रभु का दिन हमारे लिये एक यादगार का दिन है। प्रकाशितवाक्य 1:10 में यूहन्ना ने कहा था, ''कि मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया....'' यह प्रभु के पुनरुत्थान का दिन है। यह सप्ताह का पहला दिन है- रवीवार का दिन। हमें इस दिन को प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के लिए न कि मिसर में से निकलकर आने के लिये मानना है। इसी दिन हर एक सप्ताह के पहले दिन को मसीह की कलीसिया प्रभु-भोज में भाग लेती हैं (प्रेरितों 20:7)। इसी दिन के विषय में मसीही लोगों को आज्ञा देकर कहा गया है, कि वे अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार (दशमांस नहीं) बल्कि चंदा इकट्ठा किया करें। रविवार का दिन मसीही सबत का दिन नहीं है और सबत के दिन को सप्ताह के आखरी दिन से बदलकर सप्ताह का पहला दिन नहीं किया गया है। किन्तु सबत के दिन को हटा लिया गया है। सबत का दिन न तो गैर-यहूदियों के लिये था और न ही आज वह मसीह यीशु के अनुयायीयों के लिये है।